

ICSE Solved Paper 2019

HINDI

Class-X

(Maximum Marks : 80)

(Time allowed : Three hours)

(Second Language)

This paper comprises two Sections—Section A and Section B.

Attempt all the questions from Section A.

Attempt any four questions from Section B, answering at least one question each from the two books you have studied and any two other question.

The intended marks for questions or parts of questions are given in brackets [].

SECTION A

(40 marks)

Attempt all questions.

1. Write a short composition in Hindi of approximately 250 words on any one of the following topics :

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर हिन्दी में लगभग 250 शब्दों में संक्षिप्त लेख लिखिए : [15]

- आपके विद्यालय में एक मेले का आयोजन किया गया था। यह किस अवसर पर, किस उद्देश्य से किया गया था ? उसके लिए आपने क्या-क्या तैयारियाँ कीं ? आपने और आपके मित्रों ने एवं शिक्षकों ने उसमें क्या सहयोग दिया था ? इन बिन्दुओं को आधार बनाकर एक प्रस्ताव विस्तार से लिखिए।
- यात्रा एक उत्तम रुचि है। यात्रा करने से ज्ञान तो बढ़ता ही है, स्थान विशेष की संस्कृति तथा परंपराओं का परिचय भी मिलता है। अपनी किसी यात्रा के अनुभव तथा रोमांच का वर्णन करते हुए एक प्रस्ताव लिखिए।
- 'वन है तो भविष्य है' आज हम उसी भविष्य को नष्ट कर रहे हैं, कैसे ? कथन को स्पष्ट करते हुए जीवन में वनों के महत्त्व पर अपने विचार लिखिए।
- एक मौलिक कहानी लिखिए जिसका अन्त प्रस्तुत वाक्य से किया गया हो— और मैंने राहत की साँस लेते हुए सोचा कि आज मेरा मानव जीवन सफल हो गया।
- नीचे दिए गए चित्र को ध्यान से देखिए और चित्र को आधार बनाकर उसका परिचय देते हुए कोई लेख, घटना अथवा कहानी लिखिए, जिसका सीधा व स्पष्ट सम्बन्ध चित्र से होना चाहिए।



उत्तर (i)

मेले का आयोजन

बाल दिवस पर नगर के कर्नल्स ब्राइटलैंड पब्लिक स्कूल में बाल आनंद मेले का आयोजन किया गया। बाल मेले में विभिन्न प्रकार के स्टॉल छात्रों द्वारा लगाए गए। स्टॉल पर खाने-पीने की चीजों से लेकर विभिन्न प्रकार के खेलों के भी स्टॉल शामिल थे। बाल-दिवस के उपलक्ष्य में विद्यालय के शिक्षक व शिक्षिकाओं ने उपहार स्वरूप बच्चों को कूपन वितरित किए जिससे वे अपने मन पसंद की चीजें स्टॉल से खरीद सकते थे या अपने मनपसंद के गेम्स खेल सकते थे। बाल मेले को लेकर बच्चों में विशिष्ट उत्साह देखा गया। विद्यालय के शिक्षक, शिक्षिकाओं एवं अभिभावकों ने भी मेले में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। मेले की खास बात यह रही कि सभी छात्राओं द्वारा अपने-अपने स्टॉलों में साफ-सफ़ाई पर विशेष ध्यान दिया गया व स्वच्छता का संदेश दिया।

बाल-दिवस पर चित्रकला प्रतियोगिता भी रखी गई।

चित्रकला प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय व तृतीय आने वाले बच्चों को प्राचार्य व टीम द्वारा पुरस्कृत भी किया गया तथा उन्हें उपहार भी वितरण किए गए। स्कूल की प्रधानाचार्या रूबीना खानम ने कहा कि ऐसा आयोजन बच्चों के जीवन में उमंग व उत्साह भर देता है।

(ii) किसी यात्रा का वर्णन

प्रस्तावना

यात्रा एक उत्तम रुचि है। यात्रा करने से ज्ञान तो बढ़ता ही है, स्थान विशेष की संस्कृति तथा परंपराओं का परिचय भी मिलता है। यात्रा द्वारा ज्ञान प्राप्त करना एक प्रमुख व रोचक साधन है। इसके माध्यम से स्थान विशेष की जानकारी प्राप्त होने के साथ मनोरंजन भी होता है। वर्तमान में विद्यालयों द्वारा भी समय-समय पर विद्यार्थियों को शैक्षिक भ्रमण पर ले जाया जाता है ताकि विद्यार्थी विद्या के नीरस पाठ्यक्रम के स्थान पर खुले वातावरण में सहज ही ज्ञान प्राप्त कर सकें।

यात्रा वर्णन

हवाई-यात्रा मेरे लिए एक सुखद सपना थी। मेरे पिता अक्सर काम के सिलसिले में हवाई-जहाज द्वारा दूर-दूर शहरों में जाते रहते हैं किंतु अपने परिवार को साथ ले जाने का कोई अवसर नहीं आया था। मैं बड़ी उत्सुकता से ऐसे अवसर की प्रतीक्षा कर रही थी, सौभाग्य से पिछले दशहरे की छुट्टियों में मुझे यह अवसर मिल ही गया।

हमारे विद्यालय ने दशहरा अवकाश में छात्रों को हवाई-जहाज द्वारा शैक्षणिक भ्रमण के लिए गोवा ले जाने का कार्यक्रम बनाया। मैं तुरंत तैयार हो गई और मैंने माता-पिताजी को भी मुझे भेजने के लिए तैयार कर लिया। मेरी दो अन्य सहेलियाँ भी जाने के लिए तैयार हो गईं। हमारी खुशी का कोई ठिकाना न था। हमारा सपना पूरा होने जा रहा था। आकाश में उड़ने की मेरी इच्छा पूरी होने वाली थी।

निश्चित तारीख को हम अपना आवश्यक सामान लेकर विद्यालय पहुँचे। सभी विद्यार्थी विद्यालय में ही एकत्र हुए थे। अपने शिक्षकों के साथ वहाँ से टैक्सी द्वारा हम हवाई अड्डे पहुँचे। हवाई अड्डे पर काफ़ी चहल-पहल थी। पूरा हवाई अड्डा चमचमाती रोशनी से जगमगा रहा था। विमान के अंदर पहुँचने पर यात्रियों को विमान में यात्रा करते समय कुछ सावधानियों के विषय में बताया गया। निर्देशानुसार हम सबने पेटियाँ बाँध लीं। बस, कुछ ही क्षणों में विमान उड़ने वाला था। मेरा हृदय भय और खुशी के मारे तेज़ी से धड़क रहा था। विमान ने रनवे से उड़ान भरी और तेज़ी से ऊपर उठने लगा। मेरे दिल की धड़कन बढ़ने लगी। मैंने अपनी सहेली का हाथ थाम लिया। तभी विमान की एक परिचारिका ने हमें कुछ टॉफी, चॉकलेट खाने को दी। हमारी

स्थिति कुछ सामान्य हुई और हम यात्रा का आनंद लेने लगे। हम यह सोचकर ही रोमांचित हो रहे थे कि हम ज़मीन से सैकड़ों किलोमीटर ऊपर, बादलों से भी ऊपर हवा में उड़ रहे थे। हमने अपनी पेटियाँ खोल दी थीं। समय कैसे बीत गया, पता ही नहीं चला। विमान परिचारिका ने पुनः पेटियाँ बाँधने की हिदायत दी। विमान मुंबई हवाई अड्डे पर उतरने वाला था। मैं विमान परिचारिका के व्यक्तित्व व व्यवहार से बहुत प्रभावित थी। वह हम लोगों का विशेष ध्यान रख रही थी।

मुंबई हवाई अड्डे पर अनेक विमान यात्री विमान से उतर गए और अनेक यात्री विमान में चढ़े। विमान ने पुनः उड़ान भरी और कुछ ही देर में हम गोवा पहुँच गए। गोवा हवाई अड्डे पर उतरकर हम अतिथि कक्ष पहुँचे और तत्पश्चात् अपने होटल के लिए चल पड़े। मुझे मेरी पहली विमान यात्रा सदैव स्मरण रहेगी।

उपसंहार

विमान से सैर करके मुझे बहुत ही आनंद आया। इसके साथ शैक्षणिक भ्रमण में अपने मित्रों के साथ सहयोग व प्रेम से रहने का मौका भी मिला।

(iii) जीवन में वनों का महत्त्व

“ वन होंगे,

हरियाली होगी ।

तभी पृथ्वी पर

खुशहाली होगी । ”

हमारे जीवन में वनों का बहुत महत्त्व है। वृक्ष प्रकृति के अनुपम उपादान हैं, जिन पर मानव जीवन निर्भर करता है। वृक्षों के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। वृक्ष हमारे जीवनदाता हैं।

वन को जंगल भी कहा जाता है, जंगल एक ऐसी जगह है जहाँ बहुत सारे पेड़ होते हैं। इसमें पेड़ के साथ-साथ बहुत सारे जीव-जंतु भी रहते हैं। प्राचीन काल से ही वन मनुष्य के जीवन में विशेष महत्त्व रखते हैं। हमारे वन पेड़-पौधे ही नहीं अपितु अनेक उपयोगी जीव-जंतुओं व औषधियों का भंडार हैं।

वन पृथ्वी पर जीवन के लिए अनिवार्य तत्व हैं। यह प्रकृति के संतुलन को बचाए रखने में पूर्णतया सहायक होते हैं। वनों में अनेक प्रकार के पेड़-पौधों का भंडार होता है जो विभिन्न प्रकार से मानव के लिए उपयोगी हैं। वृक्षों से प्रचुर मात्रा में ऑक्सीजन प्राप्त होती है।

वन मनुष्य के लिए ही नहीं अपितु समस्त जीव-जंतुओं के लिए आवश्यक हैं। इनसे प्रकृति का संतुलन बनाए रखने में मदद मिलती है। आज वनों के अधिकाधिक कटाव से

अनेक महत्वपूर्ण जंतु लुप्त हो गए हैं। वनों से हमें फल, लकड़ियाँ, औषधियाँ इत्यादि प्राप्त होती हैं। वन अधिक वर्षा के समय मिट्टी के कटाव को रोकते हैं तथा उसकी उपजाऊ शक्ति को बनाए रखने में सहयोग करते हैं, इसलिए हम यह कह सकते हैं कि वनों का हमारे जीवन में बहुत ही महत्व है। अगर हमें ऑक्सीजन नहीं मिलेगी तो हमारी असमय मृत्यु संभव है।

(iv) कहानी 'और मैंने राहत की साँस लेते हुए सोचा कि आज मेरा मानव जीवन सफल हो गया।'

आजकल जगह-जगह कूड़ा फैला देखकर मेरा मन बहुत अशांत रहने लगा था। जगह-जगह कूड़े-कचरे की मात्रा बढ़ती ही जा रही है अतः सोचा कुछ सफाई अभियान के प्रति लोगों को जागरूक किया जाए। मैंने अपने आस-पड़ोस के लोगों को एकत्रित किया जो कि सड़कों पर जहाँ-तहाँ कूड़ा डाल देते थे। उन्हें बैठाकर समझाने की कोशिश की तथा उन्हें साफ-सफाई, पेड़-पौधों के बारे में समझाते हुए इस अभियान में शामिल होने के लिए कहा। लेकिन किसी ने मेरा साथ नहीं दिया। लेकिन मैं हार मानने वालों में से नहीं थी, कहते हैं- जहाँ चाह, वहाँ राह। बस, मैंने किसी की चिन्ता नहीं की। जगह-जगह जाकर लोगों को जागरूक करना प्रारंभ किया तथा गंदगी से फैलने वाली बीमारियों के बारे में समझाया। जैसे ही कोई कूड़ा-कचरा फेंकता, वही कूड़ा उनसे उठवाती। इस कार्य को देखकर तथा धीरे-धीरे वहाँ का वातावरण साफ देखकर लोगों ने मुझे सहयोग दिया तथा वृक्षारोपण में भी सहयोग करने लगे। सभी लोग मिलकर सड़क के किनारे व आस-पास पौधे लगाते फिर कोई उसमें पानी देता। मुझे इस कार्य में लगा देखकर मेरे आस-पड़ोस वाले भी धीरे-धीरे मेरा हाथ बँटाने लगे तथा इस अभियान में शामिल होने लगे। किसी के चाहने या न चाहने से सफलता हासिल हो पाती तो शायद असफलता जैसा कोई शब्द ही अस्तित्व में न होता। सफल होने के लिए इच्छाशक्ति बहुत ज़रूरी है। आज चारों तरफ का वातावरण शुद्ध व गंदगी रहित दिखता है, तो मैं राहत की साँस लेती हूँ कि मेरे इस कार्य से मेरा मानव जीवन सफल हो गया।

(v) लेख

प्रस्तुत चित्र बाल-श्रमिक की समस्या से सम्बन्धित है। चित्र में एक 13-14 साल का लड़का ईंटें बनाने के लिए फावड़े की सहायता से मिट्टी का गारा बनाकर एक गाड़ी में रख रहा है। लड़का यह कार्य पूरी तन्मयता और लगन के साथ कर रहा है। यह दृश्य शायद एक ईंट भट्टे का है जहाँ बच्चों से ईंट बनवाने का कार्य करवाया जा रहा है। कोई भी इस बाल-श्रम की बुराई के प्रति संवेदनशील दिखाई नहीं दे रहा है। आज भी हमारे देश में लाखों बच्चे इस बाल-श्रम की चपेट में हैं। उन्हें बचपन में किताबें व खिलौने से खेलने

के स्थान पर मज़दूरी करनी पड़ रही है। ऐसे बाल-श्रमिक घरों, कारखानों, दुकानों, होटलों, ढाबों पर मज़दूरी करते देखे जा सकते हैं। इन बाल-श्रमिकों को सुबह से लेकर रात तक कठोर परिश्रम करना पड़ता है। कई प्रकार की डाँट-फटकार सहनी पड़ती हैं। विषम परिस्थितियों में काम करने से इनके स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, लेकिन इन्हें विवश होकर ये सब सहना पड़ता है। चित्र में भी एक बालक अपनी परिस्थितियों से समझौता कर कार्य करते हुए प्रसन्न है। वह इस बात से अनभिज्ञ है कि पढ़ने-लिखने के स्थान पर इस उम्र में यह कार्य करने से उसका पूरा जीवन अंधकारमय हो जाएगा।

एक लड़का था उसके कई भाई-बहन थे। पिता एक कारखाने में नौकरी करके किसी तरह परिवार का गुज़ारा करता था। एक दिन कारखाने में काम करते समय मशीन में उसके पैर आ गए और वह अपाहिज हो गया। कारखाने से भी उसे निकाल दिया गया। परिवार के भूखे मरने की नौबत आ गयी। माँ ने परिवार का पेट पालने के लिए घरों में चूल्हा-चौका का काम करना शुरू किया लेकिन वह पैसा परिवार के पालन-पोषण के लिए पूरा न पड़ता, तब इस लड़के श्याम ने माँ का हाथ बँटाने के लिए जूते पॉलिश करने का काम शुरू किया ताकि किसी प्रकार अपने परिवार का भरण-पोषण कर सके। श्याम की उम्र विद्यालय जाकर पढ़ने की है लेकिन इस मजबूरी के कारण मज़दूरी करने से उसका पूरा जीवन बर्बाद हो जाएगा। सरकार को इस बाल-श्रम की समस्या को दूर करने के लिए युद्धस्तर पर आवश्यक प्रयास करने चाहिए।

2. Write a letter in Hindi in approximately 120 words on any one of the topics given below :

निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर हिन्दी में लगभग 120 शब्दों में पत्र लिखिए :

[7]

- आप अपने परिवार के साथ किसी एक प्रदर्शनी (Exhibition) को देखने गए थे। वहाँ पर आपने क्या-क्या देखा? वहाँ कौन-कौन सी चीज़ों ने आकर्षित किया? जीवन में उनकी क्या उपयोगिता है? अपना अनुभव बताते हुए अपने प्रिय मित्र को पत्र लिखिए।
- दिन-प्रतिदिन बढ़ते हुए जल संकट की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए नगर-पालिका के अध्यक्ष को एक पत्र लिखिए जिसमें वर्षा के जल का संचयन (Rain water harvesting) करने के लिए व्यापक स्तर पर परियोजना चलाने का सुझाव दिया गया हो।

उत्तर (i) मित्र को पत्र

56, आवास विकास

आगरा

दिनांक- 25/7/20XX

प्रिय मित्र अमित

नमस्कार,

मैं यहाँ कुशलपूर्वक हूँ। आशा करता हूँ कि तुम भी अपने परिवार के साथ कुशलपूर्वक होंगे। कुछ दिनों पूर्व मैं अपने परिवार के साथ पुस्तक व्यापार मेला प्रदर्शनी में गया। वहाँ हजारों प्रकार की पुस्तकें थीं, ज्ञान-विज्ञान की पुस्तकें सबसे अधिक थीं। मैंने वहाँ से अपने लिए सामान्य ज्ञान की पुस्तकें व प्रेमचंद लिखित गोदान व गबन पुस्तकें खरीदीं। वहाँ पुस्तकों को देखकर ऐसा मन हुआ कि बहुत-सी पुस्तकें खरीद लूँ क्योंकि वहाँ धार्मिक, साहित्यिक पुस्तकों के अतिरिक्त बाल साहित्य की भी अनेक पुस्तकें ध्यान आकर्षित कर रही थीं। मित्र पुस्तकों के अध्ययन से प्राप्त ज्ञान पग-पग पर हमारे काम आता है। विभिन्न प्रकार की ज्ञानवर्द्धक पुस्तकें जीवन में ज्ञान प्राप्त करने का मुख्य साधन हैं। पुस्तकें प्रत्येक कदम पर एक सच्चे मित्र की भाँति सही राह दिखाती हैं, हमें उन्नति के पथ पर अग्रसर करने के साथ हमें मानसिक व आत्मिक संतुष्टि पहुँचाती हैं इसलिए जीवन में पुस्तकों की बहुत उपयोगिता है।

आशा है कि तुम भी पुस्तकों के महत्त्व को समझ गए होंगे। शेष कुशल है, घर में सभी को यथायोग्य अभिवादन कहना। पत्रोत्तर की प्रतीक्षा में

तुम्हारा मित्र

रोहन

(ii) नगर पालिका के अध्यक्ष को पत्र

सेवा में,

मुख्य नगर पालिका अधिकारी,

जलसंस्थान

नगरपालिका

आगरा

दिनांक- 5/8/20XX

विषय- क्षेत्र में जल संकट हेतु पत्र

महोदय,

मैं राजेन्द्र नगर का निवासी हूँ तथा मोहल्ला सुधार समिति का अध्यक्ष हूँ। मैं आपका ध्यान लगातार होने वाली जलापूर्ति की कमी की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। दिन-प्रतिदिन शहर में जल-संकट बढ़ता ही जा रहा है। नलों में एक-एक सप्ताह पानी नहीं आता। इस परेशानी से बचने के लिए धनिक वर्ग ने अपने-अपने घरों पर जेट पम्प लगवा लिए हैं, लेकिन निर्धन वर्ग पानी के लिए तरस रहा है। पानी की नियमित पूर्ति न किए जाने से यहाँ के निवासी अत्यंत परेशान हैं।

महोदय, राजेन्द्र नगर मोहल्ला सुधार समिति का सुझाव है कि वर्षा के जल संचयन (Rain water harvesting) हेतु व्यापक स्तर पर किसी परियोजना को चलाया जाए और वर्षा के जल को भूमिगत टैंकों या पक्के तालाबों आदि में

सुरक्षित करने का प्रयास किया जाए। इस प्रकार वर्षा के जल का उपयोग कर जल-संकट से एक सीमा तक बचा जा सकता है। आपसे प्रार्थना है कि जल-संकट से जनता को राहत देने हेतु इस सुझाव पर ध्यान देने की कृपा करें। हम सदैव आपके आभारी रहेंगे।

धन्यवाद

भवदीय,

दिनेश कुमार सोनी

आगरा

3. Read the passage given below and answer in Hindi the questions that follow, using your own words as far as possible :

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए तथा उसके नीचे लिखे गए प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए। उत्तर यथासंभव आपके अपने शब्दों में होने चाहिए :

एक रियासत थी। उसका नाम था कंचनगढ़। वहाँ बहुत गरीबी थी। लोग कमज़ोर थे और धरती में कुछ उगता न था। चारों ओर भुखमरी थी। एक दिन राजा कंचनदेव राज्य की दशा से चिंतित हो उठे। अचानक उनके पास एक साधु आए। राजा ने उन्हें प्रणाम किया। राजा ने साधु को अपने राज्य के बारे में बताया और कुछ उपाय करने की प्रार्थना की। साधु मुस्कराकर बाले— “कंचनगढ़ के नीचे सोने की खान है।” इतना कहकर साधु चले गए।

राजा ने खुदाई करवाई। वहाँ सोने की खान निकली। राजा का खजाना सोने से भर गया। राजा ने अपने राज्य में जगह-जगह मुफ्त भोजनालय बनवाए, दवाखाने खुलवाए, चारागाह बनवाए तथा अन्य सुख-सुविधा के साधन उपलब्ध करा दिए। अब वहाँ कोई दुःखी नहीं था। सब लोग खुश थे। धीरे-धीरे लोग आलसी हो गए। कोई काम नहीं करता था। भोजन तक मुफ्त में मिलने लगा था। मंत्री ने राजा को बहुत समझाया और कहा— “महाराज, लोग आलसी होते जा रहे हैं। उनको काम दिया जाए।” परंतु राजा ने मंत्री की बात को टाल दिया।

कंचनगढ़ की समृद्धि को देखकर पड़ोसी रियासत के राजा को ईर्ष्या हुई। उसने अचानक कंचनगढ़ पर चढ़ाई कर दी और माँग की— “सोना दो या लड़ो।” कंचनगढ़ के आलसी लोगों ने राजा से कहा— “हमारे पास बहुत सोना है, कुछ दे दें। बेकार खून क्यों बहाया जाए?” राजा ने लोगों की बात मान ली और सोना दे दिया। कुछ दिनों बाद पड़ोसी राजा ने कंचनगढ़ पर फिर चढ़ाई कर दी। इस बार उसका लालच और बढ़ गया था। इसी प्रकार उसने कई बार चढ़ाई कर-करके कंचनगढ़ से सोना ले लिया। यह सब देखकर राजा का मंत्री बहुत परेशान हो गया। वह राजा को समझाना चाहता था, किन्तु राजा के सम्मुख कुछ बोलने की हिम्मत नहीं हो पा रही थी। अंत में उसने युक्ति से काम लिया। एक दिन मंत्री कंचनदेव को घुमाने के लिए नगर के पूर्व की ओर बने गुलाब के बाग की ओर ले गया। राजा कंचनदेव ने देखा कि बाग में दाने बिखरे पड़े हैं। कबूतर दाना चुग रहे हैं। थोड़ी दूर

पर कुछ कबूतर मरे पड़े हैं। कुछ भी समझ में न आने पर राजा ने मरे हुए कबूतरों के बारे में मंत्री से पूछा।

मंत्री ने बताया— “महाराज, इन्हें शिकारी पक्षियों ने मारा है।” राजा ने पूछा— “तो कबूतर भागते क्यों नहीं?” “भागते हैं लेकिन लालच में फिर से आ जाते हैं, क्योंकि उनके लिए यहाँ, आपकी आज्ञा से दाना डाला जाता है।” — मंत्री ने बताया। राजा ने कहा— “दाना डलवाना बंद कर दो।” मंत्री ने वैसा ही किया।

राजा अगले दिन फिर घूमने निकले। उन्होंने देखा कि दाना तो नहीं है, किन्तु कबूतर आ-जा रहे हैं। राजा ने मंत्री से इसका कारण पूछा। मंत्री ने बताया— “महाराज, इन्हें बिना प्रयास के ही दाना मिल रहा था। यह अब दाने-चारे की तलाश की आदत भूल चुके हैं, आलसी हो गए हैं। शिकारी पक्षी इस बात को जानते हैं कि कबूतर तो यहीं आएँगे अतः वे इन्हें आसानी से मार डालते हैं।” राजा चिन्ता में पड़ गए। उन्होंने शाम को मंत्री को बुलाकर कहा— “नगर के सारे मुफ्त भोजनालय बंद करवा दो। जो मेहनत करे, वही खाए। लोग निकम्मे और आलसी होते जा रहे हैं और हाँ, एक बात और। मैं अब शत्रु को सोना नहीं दूँगा, बल्कि उससे लड़ाई करूँगा। जाओ, सेना को मजबूत करो।” मंत्री राजा की बात सुनकर बहुत खुश हो गया।

- राजा कंचनदेव की चिन्ता का क्या कारण था? उन्होंने साधु से क्या प्रार्थना की? [2]
- साधु ने राजा को क्या बताया? उसके बाद राजा ने राज्य के लिए क्या-क्या कार्य किए? [2]
- पड़ोसी राजा के आक्रमण करने पर कंचनगढ़ का राजा क्या करता था और क्यों? [2]
- कबूतरों की दशा कैसी थी? उस दशा को देखकर राजा ने क्या सीखा? [2]
- राजा ने मंत्री को क्या आदेश दिए? आदेश सुनकर मंत्री की क्या स्थिति हुई? [2]

- उत्तर- (i) राजा कंचनदेव की चिन्ता का कारण था कि उनके राज्य की धरती बंजर थी, जिसके कारण वहाँ कुछ नहीं उगता था अतः वहाँ बहुत गरीबी थी। उन्होंने साधु से यह प्रार्थना की—कि राज्य की समस्या को दूर करने के लिए कोई उपाय बताएँ।
- (ii) साधु ने राजा को बताया कि कंचनगढ़ के नीचे सोने की खान है। उसके बाद राजा ने खुदाई करवाई। वहाँ सोने की खान निकली। राजा का खजाना सोने से भर गया। राजा ने अपने राज्य में जगह-जगह मुफ्त भोजनालय बनवाए, दवाखाने खुलवाए, चारागाह बनवाए तथा अन्य सुख-सुविधा के साधन उपलब्ध कराए।
- (iii) पड़ोसी राजा के आक्रमण करने पर कंचनगढ़ का राजा उन्हें लड़ाई के बदले सोना दे देता था क्योंकि कंचनगढ़ के लोग आलसी थे। कोई काम नहीं करना चाहते थे। वे राजा से कहते थे—कि हमारे पास बहुत सोना है, कुछ दे

दें। बेकार खून क्यों बहाया जाए? राजा **बैत** मान लेता था और सोना दे देता था।

- कुछ कबूतर दाना चुग रहे थे और कुछ कबूतर मरे पड़े थे। उस दशा को देखकर राजा ने सीखा कि मैं मुफ्त की सुविधाएँ जनता को देकर और आलसी नहीं बनाऊँगा बल्कि अपनी सेना को मजबूत बना कर शत्रु से मुकाबला करूँगा और अब शत्रु को सोना नहीं दूँगा।
- राजा ने मंत्री को आदेश दिया कि नगर के सारे मुफ्त भोजनालय बंद करवा दो। जो मेहनत करे, वही खाए। आदेश सुनकर मंत्री बहुत खुश हो गया।

4. Answer the following according to the instructions given :

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार लिखिए :

- निम्नलिखित शब्दों में से दो शब्दों के विलोम लिखिए : अपना, देव, नवीन, सम्मानित। [1]
- निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो पर्यायवाची शब्द लिखिए : [1]
इच्छा, आदेश, शिक्षक
- निम्नलिखित शब्दों में किन्हीं दो शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइए : [1]
सफ़ेद, युवा, हिंसक, जागना।
- निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं दो शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए : [1]
कवित्री, अशीरवाद, कृतग्य, विदूशी।
- निम्नलिखित मुहावरों में से किसी एक की सहायता से वाक्य बनाइए : [1]
चंपत होना, डींग हाँकना।
- कोष्ठक में दिए गए वाक्यों में निर्देशानुसार परिवर्तन कीजिए: [1]

- (a) प्राचीन काल में लोग पत्तों की बनी कुटिया में रहते थे। [1]

[रेखांकित का एक शब्द लिखते हुए वाक्य पुनः लिखिए।]

- (b) बीमार होने के कारण सुमन समारोह में नहीं आ सकी। [1]

['इसलिए' का प्रयोग कर वाक्य पुनः लिखिए।]

- (c) बच्चे आम तोड़ने के लिए वृक्षों पर चढ़ गए थे। [1]
[वचन बदलिए।]

उत्तर-(i) विलोम शब्द

अपना - पराया

देव - दानव

नवीन - प्राचीन

सम्मानित - अपमानित

(ii) पर्यायवाची शब्द

इच्छा - चाह, आकांक्षा

- आदेश – आज्ञा, अनुमति
शिक्षक – गुरु, आचार्य
- (iii) **भाववाचक संज्ञा**
सफ़ेद – सफ़ेदी
युवा – यौवन
हिंसक – हिंसा
जागना – जागृति/जागरण
- (iv) **शुद्ध रूप शब्द**
कवित्री – कवयित्री
अशीरवाद – आशीर्वाद
कृतग्य – कृतज्ञ

- विदूषी – विदुषी
- (v) **मुहावरे**
चंपत होना – श्यामलाल के घर से चोर सारा सामान चुराकर चंपत हो गया।
डॉंग हाँकना – रमेश की पड़ोसन बात-बात पर डॉंगे हाँकती है।
- (vi) **निर्देशानुसार परिवर्तन**
उत्तर- (a) प्राचीनकाल में लोग पर्णकुटी में रहते थे।
(b) सुमन बीमार हो गई इसलिए समारोह में न आ सकी।
(c) बच्चा आम तोड़ने के लिए वृक्ष पर चढ़ गया।

SECTION B

(40 marks)

Attempt four questions from this Section.

You must answer at least **one** question from each of the **two** books, you have studied and **any two** other questions from the same books that you have chosen.

साहित्य सागर—संक्षिप्त कहानियाँ

5. Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

उसके अन्तस्तल में वह शोक जाकर बस गया था। वह प्रायः अकेला बैठा-बैठा शून्य मन से आकाश की ओर ताका करता। एक दिन उसने ऊपर आसमान में पतंग उड़ती देखी। न जाने क्या सोचकर उसका हृदय एकदम खिल उठा। विश्वेश्वर के पास जाकर बोला, “काका! मुझे एक पतंग मँगा दो।”

['काकी'—सियारामशरण गुप्त]

[Kaki—Siyaramsharan Gupta]

- (i) 'उसके' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया गया है? उसके दुःखी होने का क्या कारण था? [2]
- (ii) क्या देखकर उसका हृदय खिल उठा था? उसने अपने पिता से क्या माँगा? [2]
- (iii) उसने उस चीज़ का प्रबंध कैसे किया? क्या उसके इस कार्य को अपराध कहना उचित होगा? समझाइए। [3]
- (iv) विश्वेश्वर ने बालक के साथ कैसा व्यवहार किया? संक्षेप में समझाते हुए उनके इस तरह के व्यवहार का कारण तथा सच्चाई जानने के बाद की स्थिति का भी वर्णन कीजिए। [3]

- उत्तर (i) 'उसके' शब्द का प्रयोग श्यामू के लिए किया है। श्यामू के अंतस्तल में अपनी काकी (माँ) की मृत्यु का शोक बस गया था। पहले तो उसे रोना भी बहुत आया, फिर माँ की कमी का दुःख मन में बैठ गया।
- (ii) उड़ती पतंग देखकर उसका हृदय खिल उठा था, उसने सोचा कि वह एक पतंग को ऊपर आसमान में भेजकर अपनी काकी को वापस अपने पास बुला लेगा। उसने

- अपने पिता से पतंग मँगवाने के लिए प्रार्थना की।
- (iii) जब कुछ दिनों तक पतंग नहीं आई तो श्यामू ने अपने पिता के कोट से चवन्नी चुराई और सुखिया दासी के लड़के भोला से पतंग का प्रबंध किया। उसके इस कार्य को अपराध कहना उचित नहीं है क्योंकि वह समझदार नहीं था, वह समझता था कि उसकी काकी पतंग की डोर के सहारे आसमान से धरती पर उसके पास आ सकती है। इसी वजह से मातृ-वियोग की तड़प से व्याकुल होकर श्यामू ने यह अपराध किया।
- (iv) जब उसके पिता विश्वेश्वर को पता चला कि श्यामू ने पतंग लाने के लिए पैसे चुराए हैं तो उन्होंने उसे बहुत मारा और पतंग फाड़ दी। विश्वेश्वर के धमकाने पर भोला ने कहा कि श्यामू भैया ने पतंग और रस्सी मँगवाने के लिए पैसे चुराए थे। कहते थे कि इस पतंग को आकाश में तानकर काकी को राम के घर से वापिस लाएँगे। विश्वेश्वर सच्चाई जानने के बाद हतबुद्धि होकर वहीं खड़े रह गए।

6. Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

विदेशों में उसके चित्रों की धूम मच गयी। भिखारिन और दो अनाथ बच्चों के उस चित्र की प्रशंसा में तो अखबारों के कॉलम के कॉलम भर गए। शोहरत से ऊँचे कगार पर बैठ चित्रा जैसे अपना सब कुछ भूल गयी।

['दो कलाकार'—मन्नु भंडारी]

- (i) 'उसके चित्रों' से क्या तात्पर्य है? समझाइए। [2]
- (ii) चित्रा कौन थी? उसके चरित्र की मुख्य विशेषता को बताइए। [2]
- (iii) अरुणा कौन थी, जब उसे भिखारिन वाली घटना का पता चला तो उस पर क्या प्रभाव पड़ा और उसने क्या किया? [3]
- (iv) चित्रकारिता और समाज सेवा में आप किसे उपयोगी मानते हैं और क्यों? कहानी के माध्यम से समझाइए। [3]

- उत्तर-(i) 'उसके चित्रों' से तात्पर्य चित्रा के चित्रों से है जिसके कारण वह विदेश में मेहनत व लगन से शोहरत की ऊँचाई पर पहुँच गई। उसकी अनेक प्रतियोगिताओं में मरी भिखारिन के 'अनाथ' शीर्षक वाले चित्र पर चित्रों की एक प्रदर्शनी लगी जिसके कारण उस चित्र की प्रशंसा में अखबारों के कॉलम भर दिए।
- (ii) चित्रा एक अमीर पिता की इकलौती संतान थी वह चित्रकला में माहिर थी। वह सदैव अपने रंग व तूलिकाओं में डूबी रहती थी। रास्ते में भिखारिन को मरा व उसके बच्चों को रोता देखकर भी चित्रा संवेदना शून्य बनी उनका एक स्केच बनाती थी।
- (iii) अरुणा एक समाज सेविका थी और वह चित्रा की अच्छी मित्र थी। जब उसे भिखारिन वाली घटना का पता चला तो अरुणा ने वह दोनों बच्चे गोद ले लिए और उन बच्चों का पालन-पोषण अपने बच्चों की तरह किया।
- (iv) चित्रकारिता और समाज सेवा में हम समाज सेवा को उपयोगी मानते हैं। चित्रकला के द्वारा हम बेजान, निर्जीव चित्रों, मूर्तियों को सजीव की तरह बनाते हैं, पर बेजान होते सजीव लोगों की तरफ ध्यान नहीं देते, यदि हम मौत से लड़ते लोगों को सहारा दें, दुःखियों की सहायता करें, तो हम सच्चे कलाकार हो सकते हैं।

7. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

मैंने देखा कि कुहरे की सफेदी में कुछ ही हाथ दूर से एक काली-सी मूर्ति हमारी तरफ आ रही थी। मैंने कहा— "होगा कोई।" तीन गज की दूरी से दिख पड़ा, एक लड़का, सिर के बड़े-बड़े बाल खुजलाता चला आ रहा था। नंगे पैर, नंगे सिर, एक मैली सी कमीज़ लटकाए है।

['अपना-अपना भाग्य'—जैनेन्द्र कुमार]

[Apna-Apna Bhagya'—Jainendra Kumar]

- (i) यहाँ पर किस बालक के सन्दर्भ में कहा गया है? उस समय उसकी क्या स्थिति थी? [2]
- (ii) बालक ने अपने घर-परिवार के सम्बन्ध में क्या-क्या बताया? [2]
- (iii) इस समय उस बालक के सामने कौन-सी समस्या थी? क्या उस समस्या का हल हो पाया? यदि नहीं तो क्यों? [3]
- (iv) इस कहानी के माध्यम से लेखक ने हमें क्या सन्देश देना चाहा है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। [3]

- उत्तर (i) यहाँ पर एक दस-बारह वर्ष के गरीब पहाड़ी लड़के के संदर्भ में कहा गया है। उसके बाल बड़े हुए, पैर नंगे थे। वह एक मैली-सी कमीज़ पहने था, उसकी आँखें बड़ी पर सूनी थीं। गोरा रंग मैल से काला पड़ गया था।
- (ii) बालक ने अपने घर-परिवार के संबंध के बारे में बताया कि उसके माँ-बाप पंद्रह कोस दूर गाँव में रहते हैं, जहाँ

से वह भागकर आया है। उसके माँ-बाप भूखे रहते हैं।

(iii) इस समय उस बालक के सामने यह समस्या थी कि वह एक रुपया और झूठा खाना खाकर गुज़ारा करता था, जहाँ नौकरी करता था, उसे वहाँ से भी हटा दिया गया था। वह भूखा था, उसका एक साथी भी था, जो मर गया। उसकी समस्या का हल नहीं हो पाया क्योंकि एक तो वह पहाड़ी था व उसकी गरीबी व हालात के कारण उसे काम नहीं मिल पा रहा था।

- (iv) इस कहानी के माध्यम से लेखक ने यह संदेश देना चाहा है कि हमें गरीबों व असहायों की मदद करनी चाहिए। उनका दुःख अपना दुःख समझना चाहिए तथा गरीबों के प्रति सहानुभूति, प्रेम, दया, परोपकार की भावना होनी चाहिए।

साहित्य सागर—पद्य भाग

(Sahitya Sagar—Poems)

8. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

“मैया, मैं तो चंद्र खिलौना लैहूँ।।

सुरी को पय पान न करिहूँ, बेनी सिर न गुथैहूँ।

मोतिन माल न धरिहूँ उर पर झुंगली कंठ न लैहूँ।।

जैहूँ लोट अबहिं धरनी पर, तेरी गोद न ऐहूँ।।

लाल कहैहूँ नंद बाबा को, तेरो सुत न कहैहूँ।।”

['सूर के पद'—सूरदास]

['Sur Ke Pad'—Surdas]

- (i) प्रस्तुत पद्य में कौन अपनी माता से ज़िद कर रहे हैं? वे क्या प्राप्त करना चाहते हैं? [2]
- (ii) उनकी माता कौन है? वे अपने पुत्र को देखकर कैसा अनुभव कर रही है? स्पष्ट कीजिए। [2]
- (iii) खिलौना न मिलने की स्थिति में बाल कृष्ण अपनी माँ को क्या-क्या धमकियाँ दे रहे हैं? स्पष्ट कीजिए। [3]
- (iv) रूठे हुए बालक को बहलाने के लिए माँ क्या कहती है? बालक पर उसका क्या प्रभाव पड़ता है? सूरदास जी की भक्ति-भावना का परिचय देते हुए समझाइए। [3]

- उत्तर-(i) प्रस्तुत पद्य में बालक कृष्ण अपनी माता से ज़िद कर रहे हैं। वे चंद्रमा रूपी खिलौना प्राप्त करना चाहते हैं।
- (ii) उनकी माता यशोदा हैं। वे अपने पुत्र को देखकर वात्सल्य सुख का अनुभव कर रही हैं। माता यशोदा कृष्ण की बाल-लीलाओं को देखकर आनंदित हो रही हैं।
- (iii) चंद्ररूपी खिलौना न मिलने की स्थिति में बाल कृष्ण अपनी माँ को तरह-तरह की धमकियाँ देते हैं— मैं सफ़ेद गाय का दूध नहीं पिऊँगा, बालों में चोटी नहीं गुथवाऊँगा, तेरी गोद में नहीं आऊँगा, तेरा पुत्र नहीं कहलाऊँगा, मोतियों की माला नहीं पहनूँगा तथा झंगोला भी नहीं पहनूँगा। यदि मुझे चंद्र

खिलौना नहीं मिला, तो मैं अभी ज़मीन पर लेट जाऊँगा, तुम्हारी गोद में नहीं आऊँगा, मैं तेरा पुत्र नहीं कहलाऊँगा और नंद बाबा का पुत्र कहलाऊँगा।

- (iv) रूठे हुए बालक को बहलाने के लिए माँ यशोदा कृष्ण के कान में कहती है कि वे चंद्रमा से भी सुंदर नई-नवेली दुल्हन के साथ उसका विवाह करवाएगी। माँ की बात सुनकर कृष्ण कहते हैं—कि माँ तेरी सौगंध मैं अभी विवाह करने जाऊँगा। सूरदास जी कहते हैं कि इस विवाह में सारे सखा बराती होंगे और सभी मिलकर मंगलगीत गाएँगे।

9. Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :

निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

“न्यायोचित सुख सुलभ नहीं

जब तक मानव-मानव को

चैन कहाँ धरती पर तब तक

शांति कहाँ इस भव को ?

जब तक मनुज-मनुज का यह

सुख भाग नहीं सम होगा

शमित न होगा कोलाहल

संघर्ष नहीं कम होगा।”

['स्वर्ग बना सकते हैं'—रामधारी सिंह 'दिनकर']

['Swarg Bana Sakte Hai'—Ramdhari Singh 'Dinkar']

- (i) 'भव' शब्द का क्या अर्थ है? कवि के अनुसार इस भव में शांति क्यों नहीं है? [2]
- (ii) शब्दों के अर्थ लिखिए— न्यायोचित, सम, सुलभ, कोलाहल। [2]
- (iii) 'शमित न होगा कोलाहल संघर्ष नहीं कम होगा' पंक्ति का भावार्थ लिखिए। [3]
- (iv) उपरोक्त पंक्तियाँ 'दिनकर जी' की किस प्रसिद्ध रचना से ली गई हैं? कविता का केन्द्रीय भाव लिखते हुए बताइए। [3]

उत्तर- (i) 'भव' शब्द का अर्थ 'संसार' है। कवि के अनुसार इस भव में शांति इसलिए नहीं है, क्योंकि जब तक मनुष्यों के न्याय के अनुसार अधिकारों को स्वीकार नहीं किया जाता, जब तक उन्हें वे अधिकार नहीं मिल जाते, तब तक समाज में शांति स्थापित नहीं हो सकती। समाज में शांति की स्थापना के लिए यह आवश्यक है कि मनुष्यों को न्यायोचित अधिकार दिए जाएँ।

(ii) शब्दों के अर्थ—

न्यायोचित - न्याय के अनुसार उचित

सम - समान

सुलभ - आसानी से प्राप्त

कोलाहल - शोर।

- (iii) 'शमित न होगा कोलाहल संघर्ष नहीं कम होगा' पंक्ति का भावार्थ—जब तक मनुष्यों को न्यायोचित सुख उपलब्ध नहीं होगा तब तक पृथ्वी पर शांति की कल्पना नहीं की जा सकती, जब तक असंतोष का कोलाहल समाप्त नहीं होगा तब तक संघर्ष की समाप्ति नहीं हो सकती।

- (iv) उपरोक्त पंक्तियाँ 'दिनकर जी' की प्रसिद्ध 'कुरुक्षेत्र' से ली गई हैं। कविता में भीष्म पितामह धर्मराज युधिष्ठिर को उपदेश देते हुए कहते हैं कि हे युधिष्ठिर! यह धरती किसी की खरीदी हुई दासी नहीं है, यहाँ पर जन्मे सभी व्यक्तियों के समान अधिकार हैं। सभी मनुष्यों को प्रकृति के तत्त्वों की समान रूप से आवश्यकता है। जब तक सभी मनुष्यों को उनके न्यायोचित सुख उपलब्ध नहीं होंगे तब तक पृथ्वी पर शांति की कल्पना भी नहीं की जा सकती, तब तक संघर्ष की समाप्ति नहीं हो सकती। कुछ लोग स्वार्थवश केवल अपने लिए भोग वस्तुओं का संचय कर रहे हैं, धरती पर उपलब्ध भोग समाग्री की तुलना में उसका उपयोग करने वाले मनुष्यों की संख्या बहुत कम है। यदि कुछ लोग स्वार्थवश अपने लिए संचय करने की प्रवृत्ति को त्याग दें, तो सभी संतुष्ट हो सकते हैं और इस पृथ्वी को स्वर्ग बनाया जा सकता है।

10. Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :

निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

जन्मे जहाँ थे रघुपति, जन्मी जहाँ थी सीता।

श्री कृष्ण ने सुनाई, वंशी पुनीत गीता।।

गौतम ने जन्म लेकर, जिसका सुयश बढ़ाया।

जग को दया दिखाई, जग को दिया दिखाया।।

वह युद्धभूमि मेरी, वह बुद्धभूमि मेरी।

वह जन्मभूमि मेरी, वह मातृभूमि मेरी।।

['वह जन्मभूमि मेरी'— सोहनलाल द्विवेदी]

['Wah Janamabhumi Meri'—Sohanlal Dwivedi]

- (i) प्रस्तुत कविता किस प्रकार की है, इस कविता में किसका गुणगान किया गया है? [2]
- (ii) कवि ने भारत को युद्धभूमि और बुद्धभूमि क्यों कहा है? समझाकर लिखिए। [2]
- (iii) प्रस्तुत कविता में जन्मभूमि की किन-किन प्राकृतिक विशेषताओं का उल्लेख किया गया है? स्पष्ट कीजिए। [3]
- (iv) प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने भारत को किन-किन महापुरुषों की भूमि कहा है? कविता का केन्द्रीय भाव लिखते हुए स्पष्ट कीजिए। [3]

उत्तर (i) प्रस्तुत कविता देशप्रेम से परिपूर्ण है। इस कविता में कवि ने अपनी मातृभूमि (भारत भूमि) की भौगोलिक व प्राकृतिक सुंदरता का गुणगान करते हुए उसे अनेक विशेषणों से संबोधित किया है।

- (ii) कवि ने भारत को युद्धभूमि और बुद्धभूमि इसलिए कहा है क्योंकि इसी धरा पर श्री राम और सीता का जन्म हुआ तथा श्रीकृष्ण ने कुरुक्षेत्र के मैदान में अर्जुन को गीता का उपदेश देकर उसे युद्ध के लिए प्रवृत्त किया था। भारत की पवित्र भूमि पर गौतम बुद्ध का जन्म हुआ जिन्होंने अहिंसा का संदेश दिया तथा दया का मार्ग दिखाया और ज्ञान का दीपक जलाकर सभी को सही मार्ग दिखाया। इसलिए कवि कहते हैं कि मेरी भारत-भूमि मेरी युद्धभूमि है, यह बुद्ध भूमि है।
- (iii) जन्म-भूमि की प्राकृतिक विशेषताओं की ओर संकेत करता हुआ कवि कहता है कि भारतवर्ष की पहाड़ियों से अनेक झरने निकलते हैं। यहाँ की झाड़ियों में चिड़ियों की चहचहाहट सुनाई पड़ती है। यहाँ जगह-जगह आम के बाग हैं जिनमें वसन्त ऋतु में जब आम पर बौर आता है तो कोयल की कूक सुनाई पड़ती है। मलयाचल पर्वत से आती हुई हवा शीतल, मंद तथा सुगन्धित है। वह सभी को प्रसन्नता से भर देती है। दक्षिण भारत के पर्वतों से आने वाली वायु सभी को उल्लसित कर देती है।
- (iv) भारत-भूमि अनेक महापुरुषों की भूमि है। यही वह भूमि है जहाँ श्री कृष्ण ने कुरुक्षेत्र के मैदान में अर्जुन को गीता का उपदेश देकर उसे युद्ध के लिए प्रवृत्त किया था। भारत की पवित्र भूमि पर गौतम बुद्ध का जन्म हुआ था जिन्होंने अपने देश का सुयश दूर-दूर तक फैलाया। गौतम बुद्ध ने अहिंसा का संदेश दिया, दया का मार्ग दिखाया और ज्ञान का दीपक जलाकर सभी को सही मार्ग दिखाया जो भारत में ही नहीं अन्य देशों में भी फैल गया। यह भारत-भूमि युद्ध भूमि है, यह महात्मा बुद्ध की भूमि है। यह मेरी जन्मभूमि और मातृभूमि है।

नया रास्ता — सुष्मा अग्रवाल

(Naya Raasta-Sushma Agarwal)

11. Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

“मीनू..... अरे मीनू कैसे कर सकती है? यह रस्म तो शादीशुदा बहन ही कर सकती है। मीनू की तो अभी शादी भी नहीं हुई।”

- (i) उपर्युक्त कथन की वक्ता कौन है उसका परिचय दीजिए। [2]
- (ii) वक्ता ने क्यों कहा कि मीनू यह रस्म नहीं कर सकती? यहाँ किस रस्म की बात हो रही है? [2]
- (iii) वक्ता की बात सुनकर मीनू तथा मीनू की माँ की स्थिति का वर्णन करते हुए बताइए कि क्या उसके द्वारा वह रस्म पूरी की गई थी? स्पष्ट कीजिए। [3]
- (iv) “एक अविवाहित स्त्री को समाज में उचित सम्मान नहीं मिलता।” उपन्यास के आधार पर अपने विचार लिखिए। [3]

- उत्तर (i) उपर्युक्त कथन की वक्ता मीनू की बुआजी हैं, जो कि एक दकियानूसी विचारों की महिला है। वह आशा के विवाह में अविवाहित मीनू द्वारा रस्में पूरी करने का विरोध करती हैं। उनकी बातें तीखी व चुभने वाली होती हैं जिससे मीनू आहत होती है।
- (ii) वक्ता ने इसलिए कहा कि मीनू यह रस्म नहीं कर सकती क्योंकि मीनू अविवाहित थी। छोटी बहन आशा के विवाह में आरती उतारने की रस्म के लिए बड़ी बहन का विवाहित होना आवश्यक है। विवाह की रस्म में बड़ी बहन आरती उतारती है।
- (iii) बुआजी की बात सुन मीनू का चेहरा मुरझा गया था। माँ मीनू की मनः स्थिति समझ गयी थी अतः उन्होंने बुआजी से कहा कि मीनू भले ही अविवाहित हो लेकिन बड़ी बहन होने के कारण वही सारी रस्म करेगी क्योंकि आजकल इन बातों का कोई महत्त्व नहीं है। इस प्रकार मीनू के द्वारा रस्म पूरी की गई।
- (iv) “एक अविवाहित स्त्री को समाज में उचित सम्मान नहीं मिलता।” इस कथन का यह अर्थ है कि जो सम्मान एक विवाहित स्त्री को मिलता है वह अविवाहित स्त्री को समाज नहीं दे पाता। सभी लोग अविवाहित के लिए तरह-तरह की बातें करते हैं। लड़की के लिए विवाह करना अत्यंत आवश्यक है वरना समाज उसे जीने नहीं देता। समय-समय पर मीनू की माँ भी मीनू को शादी करने के लिए उत्साहित करती है, उनका कहना है कि बेटे का वास्तविक घर उसके माता-पिता का घर नहीं होता जहाँ वह इतने वर्ष रहती है वरन् उसका वास्तविक घर तो उसकी ससुराल होता है। माता-पिता तो उसे दूसरों की अमानत मानकर उसकी देखभाल करते हैं व उचित समय आने पर उसे विदा कर देते हैं।

12. Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

आखिर सरिता को देखने का दिन आ ही गया। अमित के घर में विशेष चहल-पहल थी। अमित की माताजी में विशेष उत्साह नज़र आ रहा था। माताजी के कहने में आकर उसके पिता भी इस रिश्ते में रुचि लेने लगे थे। अमित की बहन मधु भी अपनी होने वाली भाभी को देखने के लिए उत्सुक थी।

- (i) अमित कौन है? उसका संक्षिप्त परिचय दीजिए। [2]
- (ii) विशेष चहल-पहल का क्या कारण था, इस अवसर पर अमित की स्थिति स्पष्ट कीजिए। [2]
- (iii) मायारामजी को स्वर्ग की अनुभूति कहाँ और कैसे होती है और क्यों होती है? [3]
- (iv) अमित और सरिता के बीच हुई बातचीत को संक्षेप में लिखिए। [3]

- उत्तर (i) अमित उपन्यास का प्रमुख पात्र है। वह मेरठ का रहने वाला व मायाराम जी का पुत्र है। अमित पढ़ा-लिखा, समझदार, जिम्मेदार, भावुक माता-पिता का आज्ञाकारी पुत्र है। वह दहेज लेने के खिलाफ़ है।
- (ii) सरिता को देखने का दिन आ गया। परिवार के सभी लोग इस रिश्ते को लेकर काफी उत्साहित थे तथा अमित के घर में विशेष चहल-पहल थी लेकिन अमित के चेहरे पर उदासी छायी हुई थी। अपने ही माता-पिता द्वारा एक धनी लड़की के हाथों स्वयं को बेचे जाने की कल्पना कर के वह उदास हो गया। अमित धनी घर की लड़की सरिता से शादी करके स्वयं को बेचना नहीं चाहता था।
- (iii) धनीमल जी की कोठी बहुत शानदार थी। उस कोठी में घुसते ही मायाराम जी को स्वर्ग की अनुभूति हुई। धनीमल जी ने मायाराम जी का खूब आदर-सत्कार किया। अनेक प्रकार की मिठाइयाँ, फल-मेवा उनके सामने रखे गए। यह सब देखकर उन्हें बहुत ही अच्छा लगा।
- (iv) अमित व सरिता को एकांत में बातें करने का अवसर मिला तो अमित ने सरिता से उसके शौक, पढ़ाई, घर के काम इत्यादि से सम्बन्धित कुछ प्रश्न पूछे। सरिता के द्वारा दिए गए उत्तर सुनकर अमित हैरान रह गया क्योंकि सरिता पढ़ाई में कमजोर थी तथा उसने कभी घर में कोई काम नहीं किया था। जब अमित ने सरिता से उसकी रुचि के बारे में पूछा तो सरिता ने तुरन्त जवाब दिया कि उसे पेंटिंग व कार ड्राइविंग में विशेष रुचि है। उसे गृहकार्यों में बिल्कुल रुचि नहीं है।

13. Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

मीनू के हृदय में बचपन से ही अपंगों के लिए दया की भावना थी परन्तु मनोहर को तो वैसे भी वह बचपन से जानती थी। इसीलिए उसकी यह हालत उससे देखी नहीं जा रही थी। मीनू ने मन ही मन निश्चय किया कि वह किसी न किसी रूप में मनोहर की सहायता अवश्य करेगी। विवाह के फालतू खर्च में से कुछ रुपए बचाकर अपाहिज मनोहर की सहायता करने का उसने संकल्प लिया।

- 60 (ii) मनोहर एक फैक्ट्री में काम करता था। फैक्ट्री में काम करते समय उसका एक पैर व सीधे हाथ की दो उँगलियाँ मशीन में आकर कट गई थीं। तत्पश्चात् अपाहिज होने के कारण उसे कोई नौकरी नहीं देता था।
- (iii) मीनू से मनोहर की हालत देखी नहीं गई। वह बचपन से ही मनोहर को जानती थी। मीनू ने विवाह के फालतू खर्च के कुछ रुपए बचाकर मनोहर की सहायता करने का निर्णय किया। मीनू ने अपने विवाह के फालतू खर्च से पाँच हजार रुपये बचाकर उसे पान की दुकान खुलवाने का निश्चय किया जिससे मनोहर बाकी बची उँगलियों के सहारे पान लगा सकता था। माता-पिता की स्वीकृति

पाकर मीनू अपने घर के सामने ही मनोहर को पान की दुकान खुलवा देती है जिससे मनोहर की जिन्दगी सँवर जाती है।

- (iv) मीनू के इस कार्य से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि यदि प्रत्येक सम्पन्न व्यक्ति अपनी जिन्दगी में किसी एक अपाहिज की सहायता करे और उसे छोटा-सा काम करा दे तो हमारे देश से अपंगों की बेरोज़गारी की समस्या दूर हो सकती है। इस तरह वे अपाहिज किसी पर बोझ न रहेंगे।

मंदिर के रास्ते में एक बूढ़ा अपाहिज था जो कि रोज़ भीख माँगता था, उसे कम्बल व रोज़ खाना देकर मैंने उसकी मदद की है, जो भी घर में कपड़े होते थे वो उसके लिए बच्चों के हाथ भिजवाती थी। अब तो उसकी मृत्यु हो चुकी है।

एकांकी संचय

(Ekanki Sanchay)

14. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

अब भी आँखें नहीं खुलीं? जो व्यवहार अपनी बेटी के लिए दूसरों से चाहते हो वही दूसरे की बेटी को भी दो। जब तक तुम बहू और बेटी को एक-सा नहीं समझोगे, न तुम्हें सुख मिलेगा न शांति।

['बहू की विदा'—विनोद रस्तोगी]
['Bahu Ki Vida'—Vinod Rastogi]

- (i) वक्ता का परिचय देते हुए कथन का सन्दर्भ लिखिए। [2]
- (ii) “अब भी आँखें नहीं खुलीं?” कहने से वक्ता का क्या अभिप्राय है? पाठ के सन्दर्भ में समझाइए। [2]
- (iii) एकांकी के अन्त में श्रोता क्या फ़ैसला लेता है और क्यों? समझाइए। [3]
- (iv) इस एकांकी से आपको क्या शिक्षा मिलती है? एकांकी के उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। [3]

उत्तर (i) वक्ता राजेश्वरी जीवनलाल की पत्नी, कमला की सास है। जिसकी आयु छियालीस वर्ष है। राजेश्वरी एक सहृदय, दयालु व ममतामयी माँ है। वह दहेज की विरोधी है। राजेश्वरी जीवनलाल को समझाती है कि जो व्यवहार अपनी बेटी के लिए दूसरों से चाहते हो वही दूसरे की बेटी को भी दो। बहू और बेटी को एक समान समझो, अगर हर बेटे वाला यह याद रखे कि वह बेटी वाला भी है तो सब उलझने सुलझ जाएँ।

- (ii) “अब भी आँखें नहीं खुलीं?” कहने से वक्ता का अभिप्राय है कि जो व्यवहार हम अपनी बेटी के लिए दूसरों से चाहते हैं वही दूसरे की बेटी को भी देना चाहिए। कभी भी बेटी व बहू में भेद-भाव नहीं करना चाहिए।

- (iii) एकांकी के अंत में श्रोता को अपनी गलती का एहसास होता है कि दहेज के लोभ में पड़कर अपनी बहू और बेटी को एक बराबर न समझना उसकी भूल थी इसलिए वह लज्जित होता है। जीवनलाल ने अपने जीवनभर की कमाई अपनी बेटी गौरी के विवाह में लगा दी लेकिन बेटी के ससुराल वालों को फिर भी दहेज पसंद नहीं आया इसलिए उन्होंने गौरी को विदा नहीं किया, इससे जीवनलाल की भावनाओं को बहुत ठेस पहुँची। इसके बाद जीवनलाल अपनी गलती समझ गए। गौरी के ससुराल वालों के व्यवहार ने वक्ता की आँखें खोल दीं।
- (iv) इस एकांकी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि समाज में फैली दहेज की समस्या को दूर करना चाहिए। जीवनलाल जैसे दहेज के लोभी समाज में अपनी झूठी शान व प्रदर्शन के चलते दहेज की अनुचित माँग करते हैं, वे यह भूल जाते हैं कि हमारी बहू किसी की बेटी है और हमारी बेटी भी किसी की बहू है। आज दहेज के लिए हम अपनी बहू को परेशान कर रहे हैं तो संभव है कि हमारी बेटी के साथ भी वैसा ही हो। प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष किसी भी रूप में लिया, दिया गया दहेज अनुचित है अतः बहू व बेटी में कोई अन्तर न मानते हुए दहेज जैसी कुप्रथा का विरोध करने का प्रयास करना चाहिए।

15. Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

आपके विवेक पर सबको विश्वास है। मैं आपसे निवेदन करने आई हूँ कि यद्यपि समय के फेर से आज हाड़ा, शक्ति और साधनों में मेवाड़ के उन्नत राज्य से छोटे हैं, फिर भी वे वीर हैं। मेवाड़ को विपत्ति के दिनों से सहायता देते रहे हैं। यदि उनसे कोई धृष्टता बन पड़ी हो, तो महाराणा उसे भूल जाएँ और राजपूत शक्तियों में स्नेह का सम्बन्ध बना रहने दें।

['मातृभूमि का मान'—हरिकृष्ण 'प्रेमी']

['Matribhoomi Ka Man'—Harikrishna 'Premi']

- (i) प्रस्तुत कथन किसने, किससे कहा है? स्पष्ट कीजिए। [2]
- (ii) मेवाड़ को विपत्ति के दिनों में किसने सहायता दी है? चारणी यह बात क्यों याद दिलाती है? स्पष्ट कीजिए। [2]
- (iii) चारणी ने महाराणा को अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने का क्या उपाय बताया? यह कितना उचित था? इस सन्दर्भ में अपने विचार दीजिए। [3]
- (iv) 'मातृभूमि का मान' कैसी एकांकी है? शीर्षक की सार्थकता सिद्ध करते हुए बताइए। [3]

उत्तर (i) प्रस्तुत कथन चारणी ने महाराणा लाखा से कहा है। चारणी ने महाराणा लाखा से कहा कि यद्यपि हाड़ा शक्ति व साधनों में मेवाड़ से छोटे हैं फिर भी वे वीर हैं। मेवाड़ को उसकी विपत्ति के दिनों में सहायता देते रहे हैं अतः उन्हें क्षमा कर दें और राजपूत शक्तियों में स्नेह का संबंध बना रहने दें।

- (ii) मेवाड़ को विपत्ति के दिनों में हाड़ाओं ने सहायता दी है। चारणी यह बात इसलिए याद दिलाती हुई कहती है क्योंकि हाड़ाओं ने विपत्ति के समय सदैव ही मेवाड़ की सहायता की है अतः उनकी भूल को क्षमा कर राजपूत शक्तियों के बीच आपसी स्नेह का संबंध बना रहे।
- (iii) चारणी ने महाराणा को अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने का यह उपाय बताया कि आप बूँदी का नकली दुर्ग बनवा दें और उसके विध्वंस द्वारा अपनी प्रतिज्ञा पूरी करें। यह सही था क्योंकि एक वीर सैनिक अपनी मातृभूमि के लिए अपने प्राणों का बलिदान कर देता है परंतु मातृभूमि के मान को खंडित नहीं होने देता। इसी प्रकार इस एकांकी में भी हाड़ाओं की मातृभूमि बूँदी के वीर जो अपनी मातृभूमि से अगाध प्रेम करते हैं और मातृभूमि के मान की रक्षा के लिए अपने प्राणों के उत्सर्ग को भी तत्पर रहते हैं।
- (iv) 'मातृभूमि का मान' देशभक्ति, एकता व मातृभूमि के लिए बलिदान का भाव जगाने वाली एकांकी है। इस एकांकी में मेवाड़ के महाराणा लाखा अपनी प्रतिज्ञा पूर्ति के लिए बूँदी के दुर्ग की प्रतिकृति में ससैन्य प्रवेश कर अपना ध्वज फहराना चाहते हैं। लेकिन हाड़ाओं की मातृभूमि बूँदी के वीर जो अपनी मातृभूमि से अगाध प्रेम करते हैं और मातृभूमि के मान की रक्षा के लिए अपने प्राणों के उत्सर्ग को भी तत्पर रहते हैं, का एक वीर सैनिक वीर सिंह जो मेवाड़ की सेना में सिपाही है अपनी मातृभूमि के मान की रक्षा के लिए छद्म युद्ध को वास्तविक मानकर बूँदी के नकली दुर्ग की रक्षा के लिए अपने प्राणों का बलिदान दे देता है, लेकिन मातृभूमि के मान को खंडित नहीं होने देता। इस तरह यह एकांकी मातृभूमि के मान को केन्द्र में रखकर लिखी गई है।

16. Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

बेटा, बड़प्पन बाहर की वस्तु नहीं— बड़प्पन तो मन का होना चाहिए। और फिर बेटा घृणा को घृणा से नहीं मिटाया जा सकता। बहू तभी पृथक होना चाहेगी जब उसे घृणा के बदले घृणा दी जाएगी। लेकिन यदि उसे घृणा के बदले स्नेह मिले तो उसकी समस्त घृणा धुँधली पड़कर लुप्त हो जाएगी।

['सूखी डाली'—उपेन्द्रनाथ 'अशक']

['Sukhi Dali'—Upendranath 'Ashka']

- (i) प्रस्तुत कथन का वक्ता कौन है? उसका संक्षिप्त परिचय दीजिए। [2]
- (ii) श्रोता ने वक्ता को छोटी बहू के संबंध में क्या बताया था? [2]
- (iii) वक्ता ने परिवार में एकता बनाए रखने का क्या उपाय निकाला? क्या वे इसमें सफल हुए? स्पष्ट कीजिए। [3]

(iv) प्रस्तुत एकांकी किस प्रकार की एकांकी है? इस एकांकी लेखन का क्या उद्देश्य है? [3]

- उत्तर (i) प्रस्तुत कथन के वक्ता दादाजी (मूलराज) हैं। दादा मूलराज एकांकी के सबसे प्रमुख और वरिष्ठ पात्र हैं, उनकी आयु 72 वर्ष है। इतनी आयु होने पर भी वे पूर्णतः स्वस्थ हैं। वे एक परिश्रमी, बुद्धिमान, दूरदर्शी, अनुभवी व्यक्ति हैं। उन्होंने अपने परिश्रम के बल पर ही सरकार से प्राप्त एक मुरब्बा ज़मीन को 10 मुरब्बा बना लिया। वे बेटे-पोतों आदि से भरे परिवार के मुखिया हैं। उन्होंने पूरे परिवार को अपनी सूझबूझ से एक सूत्र में बाँध रखा है। वे मुखिया के कर्तव्यों से भली-भाँति परिचित हैं। वे सबके लिए प्रेरणास्त्रोत हैं।
- (ii) श्रोता ने वक्ता को छोटी बहू के संबंध में यह बताया कि बड़प्पन बाहरी वस्तु का नहीं वरन् मन का होना चाहिए। यदि उसे घृणा के बदले स्नेह मिलेगा तो वह अलग होने की बात न सोचेगी। यदि सूझबूझ, दूरदर्शिता और समझदारी से काम लिया जाए, तो पारिवारिक समस्याओं को सरलतापूर्वक सुलझाया जा सकता है और परिवार को टूटने से बचाया जा सकता है।
- (iii) वक्ता ने परिवार वालों को समझाते हुए कहा कि मुझे यह जानकर बड़ा दुःख हुआ कि छोटी बहू का मन यहाँ नहीं लगता। छोटी बहू एक बड़े घर की पढ़ी-लिखी लड़की है। वहाँ सबसे आदर पाती थी लेकिन यहाँ छोटी बहू होने के कारण उसे प्रत्येक का आदेश मानना पड़ता है

जिससे उसका व्यक्तित्व दब गया है। छोटी बहू अक्ल में हम सबसे बड़ी है, हमें उसकी बुद्धि और योग्यता का लाभ उठाना चाहिए। इसलिए यहाँ भी उसे उचित आदर-सत्कार मिले, सब उसका कहना मानें और उसका काम भी आपस में बाँट लें। दादाजी इस कार्य में भी सफल हुए और इस प्रकार परिवार के सभी सदस्यों को उचित निर्देश देते हैं जिससे छोटी बहू के व्यवहार में परिवर्तन आ जाता है।

- (iv) प्रस्तुत एकांकी एक संयुक्त परिवार की कथा है। उपेन्द्रनाथ 'अशक' द्वारा रचित 'सूखी डाली' का उद्देश्य वर्तमान समय में संयुक्त परिवार के महत्त्व को दर्शाना है। यद्यपि संयुक्त परिवार में कुछ खट्टे-मीठे फल आते रहते हैं, लेकिन हमें संयम व पारस्परिक सहयोग में सद्भावना बनाए रखनी चाहिए। परिवार के मुखिया को दादाजी के समान परिवार के प्रत्येक सदस्य की भावनाओं का सम्मान करते हुए अपनी सोच व व्यवहार में समय के साथ आधुनिकता का समावेश भी करना चाहिए। परिवार में नए आए सदस्यों को आपसी सामंजस्य बैठाने की कोशिश करनी चाहिए क्योंकि संगठन में ही शक्ति है। अलग-अलग होकर हमारा विकास बाधित और व्यक्तित्व कुंठित हो जाता है अतः आपसी सहयोग, प्रेम, दया, आदर आदि मूल्यों का जीवन में विकास करते हुए मिलकर रहने की प्रेरणा देना ही इस एकांकी का उद्देश्य है।

